

## CLASS-25: Summary

1. हमने जाना कि धर्म-अधर्म, आकाश द्रव्यों के उपकार एक-एक सूत्र में
  - a. और पुद्गल द्रव्य के उपकार दो सूत्रों में वर्णित हैं
2. शरीर, वचन, मन और प्राणापान पुद्गल के उपकार हैं
3. सूत्र बीस **सुख-दुःख-जीवित-मरणोपग्रहाश्च** के अनुसार सुख, दुःख, जीवन और मरण भी पुद्गल द्रव्य के ही उपग्रह अर्थात् उपकार हैं
4. संसारी जीव पुद्गल के कारण से ही संसार में सुख-दुःख प्राप्त करते हैं
5. इष्ट वस्तुओं का समागम होने पर, अन्तरंग में उत्पन्न आह्लाद के परिणाम को सुख कहते हैं
  - a. और इससे जीवात्मा को जो प्रसन्नता होती है
  - b. वह सुख का परिणाम होता है
6. सुख प्राप्ति के अंतरंग और बाह्य दोनों ही कारण पौद्गलिक हैं
  - a. **अंतरंग कारण** है - सातावेदनीय कर्म का उदय होना
  - b. और **बाहरी कारण** है - साता के उदय या उदीरणा के लिये अनुकूल सामग्री मिलना
  - c. जबतक पुद्गल की संगति है और हमारे कार्य चल रहे हैं
  - d. तब तक पुद्गल के सहयोग से सुख की प्राप्ति होगी
7. यह पौद्गलिक सुख, जीव का **आत्मिक सुख नहीं** होता है
8. पौद्गलिक शरीर, मन, वचन, प्राणापान - अनुकूल होने पर सुखरूप
  - a. और प्रतिकूल होने पर दुःखरूप हो जाते हैं
  - b. जैसे निरोगी शरीर सुखरूप है
  - c. और Health, Height या रंग-रूप प्रतिकूल होना दुःखरूप है

- d. अतः पुद्धल का उपकार सुख रूप भी है और दुःख रूप भी
9. हमने जाना कि **दुःख का नहीं होना ही सुख है**
- दुःख; सुख की कीमत बताता है
  - जैसे अस्वस्थ होने पर स्वास्थ्य की कीमत समझ आती है
10. द्रव्यसंग्रह ग्रन्थ के अनुसार जीव पुद्धल कर्म के ही फल को भोगता है
- जो सुख या दुःख होते हैं
11. हमने जाना कि व्यवहार 'पर' को ही ग्रहण करता है
- और **पराश्रित** होता है
  - निश्चय स्वाश्रित होता है
12. पराश्रित ही व्यवहार संसार का कारण होता है
- संसारिक सुख और दुःख पराश्रित है
  - 'पर' पुद्धल के आश्रित सुख-दुःख भी 'पर' हैं
13. शरीर मन आदि 'पर' हैं
- इनको छोड़के किसी की इच्छा करना स्वाश्रित सुख होगा
  - अन्य सब सुख **पराश्रित** हैं
14. शरीर की तरह वचन भी 'पर' हैं
- इसलिये वचन भी पराश्रित हैं
  - वचनों से भी किसी को सुख और किसी को दुःख मिलता है
15. मन और उसकी परिणति जैसे विचार, इच्छाएँ, planning आदि भी पौद्धलिक हैं
- अतः मानसिक सुख पराश्रित है
  - इच्छाएँ पूर्ण होने पर सुख और अपूर्ण होने पर दुःख मिलता है
16. 'पर' मन 'पर' के बारे में सोचता है
- और उनके पूरे होने पर खुश होता है तो हम भी खुश हो जातें हैं

- b. और पूरे नहीं होने पर मन और हम दुखी हो जातें हैं
17. इन सूत्रों का मनोवैज्ञानिक अध्यनन करने से हम मन की मानसिकता अच्छे से समझ सकते हैं
- आत्मा और मन दोनों के function बिल्कुल different हैं
  - मन को 'स्व' से भिन्न मानना भेद-विज्ञान है
  - यदि हम मन के विचार आदि को अपने से different मानेंगे
  - तो उसके दुःखी होने से दुःखी नहीं होंगे
18. जब हम मन को ही 'स्व' समझ लेते हैं
- तो मन के साथ रहना कठिन हो जाता है
19. प्राणापान भी पुद्धल का उपकार है
20. इसकी प्रवृत्तियाँ अनुकूल चलने पर सुख देती हैं
- और प्रतिकूल होने पर दुःख देती हैं
  - जैसे कोरोना में बाधित श्वास के किये oxygen लेने में सुख था
21. पौद्धलिक चीज़ें हमारे लिये बाधा पहुँचाती हैं
- और इन्हीं से सुख-दुःख मिलता है
22. शरीर, इन्ड्रियों और मन के अनुकूल बाह्य सामग्रियाँ भी
- हमारे भीतर सातावेदनीय कर्म को उदीरित कर भीतर से सुख का अनुभव देती हैं
23. इसलिए संसारी जीव सुख के लिए अनुकूल बाह्य सामग्री की संयोजना करता है
- जैसे अच्छा well maintained Air conditioned घर
  - सारी अनुकूल और comfortable चीजें